कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

कृषि पर्यवेक्षक (Agriculture Supervisor) की भर्ती हेतु परीक्षा की योजना

कृषि पर्यवेक्षक पद की भर्ती हेतु एक लिखित परीक्षा आयोजित की जावेगी। परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर मेरिट (वरीयता सूची) बनाई जावेगी।

परीक्षा की योजना : लिखित परीक्षा हेतु बहुविकल्पीय प्रकार (MCQ type) का एक वस्तुनिष्ठ (Objective) प्रश्नपत्र होगा। प्रश्नपत्र में पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तीन भाग होंगे। जिसके लिए निर्धारित अधिकतम अंक उनके सामने दर्शित है। प्रश्नपत्र का स्तर सीनियर सेकेन्डरी स्तर का होगा। प्रश्नपत्र में प्रश्नो की संख्या 100 होगी तथा अधिकतम पूर्णांक 400 अंक होगा। सभी प्रश्न समान अंकों के होंगे। प्रश्न पत्र की अवधि 2 घंटे की होगी। प्रत्येक सही उत्तर के लिए 4 अंक प्रदान किए जाएँगे तथा प्रत्येक गलत उत्तर का 1 अंक काटा जाएगा।

प्रश्नपत्र का भाग	विषय	प्रश्नों की संख्या	समय	कुल अंक
भाग-अ	सामान्य हिन्दी	15	2 घंटे	60
भाग-ब	राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति	25		100
भाग-स	शस्य विज्ञान, उद्यानिकी एवं पशुपालन	60		240
		100		400

पाठ्यक्रम

भाग-अ : सामान्य हिन्दी

प्रश्नों की संख्या : 15
पूर्णांक : 60

दिये गये शब्दों की संधि एवं शब्दों का संधि-विच्छेद, उपसर्ग एवं प्रत्यय-इनके संयोग से शब्द-संरचना तथा शब्दों से उपसर्ग एवं प्रत्यय को पृथक करना, इनकी पहचान, समस्त (सामासिक) पद की रचना करना, समस्त (सामासिक) पद का विग्रह करना, शब्द युग्मो का अर्थ भेद, पर्यायवाची शब्द और विलोम शब्द, शब्द शुद्धि – दिये गये अशुद्ध शब्दों को शुद्ध लिखना, वाक्य शुद्धि-वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को छोड़कर वाक्य संबंधी अन्य व्याकरणिक अशुद्धियों का शुद्धिकरण, वाक्यांश के लिए एक उपयुक्त शब्द, पारिभाषिक शब्दावली- प्रशासन से संबंधित अंग्रेजी शब्दों के समक्ष हिन्दी शब्द, मुहावरे-वाक्यों में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है, लोकोक्ति वाक्यों में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है।

भाग-ब राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति

प्रश्नो की संख्या: 25
पूर्णांक: 100

राजस्थान की भौगोलिक संरचना-भौगोलिक विभाजन, जलवायु, प्रमुख पर्वत, नदियों, मरूर्थल एवं फसलें, राजस्थान का इतिहास-सभ्यताएं-कालीबंगा एवं आहड़, प्रमुख व्यक्तित्व - महाराणा कुम्भ, महाराणा प्रताप, महाराणा सांगा, राव जोधा, राव मालदेव, महाराजा जसवंतसिंह, वीर दुर्गादास, जयपुर के महाराजा मानसिंह/प्रथम, सवाई जयसिंह, बीकानेर के महाराजा गंगासिंह इत्यादि, राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार, लोक कलाकार, संगीतकार, गायक कलाकार, खेल एवं . खिलाड़ी इत्यादि, भारतीय स्वंतत्रता संग्राम में राजस्थान का योगदान एवं राजस्थान का एकीकरण। विभिन्न राजस्थानी बोलिंया, कृषि पशुपालन क्रियाओं की राजस्थानी शब्दावली। कृषि पशुपालन एवं व्यावसायिक शब्दावली।लोक देवी देवता- प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय कहावतें, वस्त्र एवं। प्रमुख लोक

पर्व, त्योहार मेले- पशु मेले। राजस्थानी लोक कथा, लोक गीत एवं नृत्य, मुहावरे, 'फड़, लोक नाट्य , लोक वाद्य एवं कठपुतली कला। विभिन्न जातियां-जन जातियां। स्त्री पुरुषों के आभूषण चित्रकारी एवं हस्तशिल्पकला - चित्रकला की विभिन्न शैलियां, भित्ति चित्र, प्रस्तर शिल्प, काष्ठ कला, मृदमाण्ड (मिट्टी) कला, उस्ता कला, हस्त औजार नमदे- गलीचे आदि। स्थापत्य-दुर्ग, महल, हवेलियाँ, छतरिया, बावड़ियां, तालाब, मंदिर-मस्जिद आदि। संस्कार एवं रीति रिवाज। धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थल।

भाग-स शस्य विज्ञान, उद्यानिकी एंव पशुपालन **प्रश्नो की संख्या: 60**
पूर्णांक: 240

(अ) शस्य विज्ञान

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, कृषि एवं कृषि सांख्यिकी का सामान्य ज्ञान। राज्य में कृषि, उद्यानिकी एवं पशुधन का परिदृश्य एवं महत्व। राजस्थान की कृषि एवं उद्यानिकी उत्पादन में मुख्य बाधाऐ। राजस्थान के जलवायवीय खण्ड, मृदा उर्वरकता एवं उत्पादकता। क्षारीय एवं उसर भूमियाँ, अम्लीय भूमि एवं इनका प्रबन्धन। राजस्थान में मृदाओं का प्रकार, मृदा क्षरण एवं मृदा संरक्षण के तरीके, पौधो के लिए आवश्यक पोषक तत्व, उपलब्धता एवं स्रोत, राजस्थानी भाषा में परम्परागत शस्य कियाओं की शब्दावली। जीवाशं खादों का महत्व, प्रकार एवं बनाने की विधियां तथा नत्रजन, फास्फोरस, पोटेशियम उर्वरक, एकल, मिश्रित एवं योगिक उर्वरक एवं उनके प्रयोग की विधियां। फसलोत्पादन में सिचांई का महत्व, सिचांई के स्रोत, फसलों की जल मांग एवं प्रभावित करने वाले कारक। सिचांई की विधियां- विशेषतः फव्वारा, बूंद बूंद रेनगन आदि। सिचाई की आवश्यकता, समय एवं मात्रा । जल निकास एवं इसका महत्व, जल निकास की विधियां । राजस्थान के संदर्भ में परम्परागत -सिंचाई से संबंधित शब्दावली । मृदा परीक्षण एवं समस्याग्रस्त मृदाओं का सुधार । साईजेलज, हे मेकिंग ।

खरपतवार- विशेषताएँ वर्गीकरण, खरपतवारों से नुकसान, खरपतवार नियंत्रण की विधियां, राजस्थान की मुख्य फसलों में खरपतवारनाशी रसायनों से खरपतवार नियंत्रण। खरपतवारों की राजस्थानी भाषा में शब्दावली।

निम्न मुख्य फसलों के लिए जलवायु, मृदा, खेत की तैयारी, किस्मे, बीज उपचार, बीज दर, बुवाई समय, उर्वरक, सिचाई, अन्तरशस्य पौध संरक्षण, कटाई-मढाई, भण्डारण एवं फसल चक की जानकारी।

अनाज वाली फसलें - मक्का, ज्वार, बाजरा, धान, गेहूं एवं जौ ।

दालें - मूंग, चवला, मसूर, उड़द, मोठ, चना एवं मटर ।

तिलहनी फसले – मूगंफली, तिल, सोयाबीन, सरसों, अलसी, अरण्डी, सूरजमूखी एवं तारामीरा ।

रेशेदार फसलें – कपास ।

चारे वाली फसलें – बरसीम, रिजका एवं जई ।

मसाले वाली फसलें - सौंफ, मैथी, जीरा एवं धनियां ।

नकदी फसलें - ग्वार एवं गन्ना।

उत्तम बीज के गुण, बीज अंकुरण एवं इसको प्रभावित करने वाले कारक, बीज वर्गीकरण, मूल केन्द्रक बीज, आधार बीज एवं प्रमाणित बीज।

शुष्क खेती - महत्व, शुष्क खेती की तकनीकी । मिश्रित फसलें, इसके प्रकार एवं महत्व । फसल चक महत्त्व एवं सिद्वान्त। राजस्थान के संदर्भ में कृषि विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी। अनाज एवं बीज का भंडारण ।

(ब) उद्यानिकी

उद्यानिकी फलो एवं सब्जियों का महत्व, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य। फलदार पौधों की नर्सरी प्रबन्धन। पादप प्रवर्धन , पौध रोपण । फलोद्यान के स्थान का चुनाव एवं योजना। उद्यान लगाने की विभिन्न रेखांकन विधियां | पाला, लू एवं अफलन जैसी मौसम की विपरीत परिस्थितियां एवं इनका समाधान। फलोध्यान में विभिन्न पादप वृद्धि नियंत्रकों का प्रयोग। सब्जी उत्पादन की विधियां एवं सब्जी उत्पादन में नर्सरी प्रबंधन। राजस्थान में जलवायु, मृदा, उन्नत किस्मे , प्रवर्धन विधियां, जीवांश खाद व उर्वरक, सिचांई, कटाई,

उपज, प्रमुख कीट एवं बीमाँरियां एवं इनका नियंत्रण सहित निम्न उद्यानिकी फसलों की जानकारी - आम, नीबूवर्गीय फल, अमरूद, अनार, पपीता, बेर, खजूर, ऑवला, अंगूर, लहसूवा, बील, टमाटर, प्याज, फूल गोभी, पत्ता गोभी, भिण्डी, कद्दू वर्गीय सब्जियां, बैंगन, मिर्च, लहसुन, मटर, गाजर, मूली, पालक। फल एवं सब्जी परीक्षण का महत्व, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य, फल परीक्षण के सिद्धान्त एवं विधियां | डिब्बा बंदी, सुखाना एवं निर्जलीकरण की तकनीक व राजस्थान में इनकी परम्परागत विधियां। फलपाक (जैम), अवलेह (जेली) केन्डी, शर्बत, पानक (स्कवेश) आदि को बनाने की विधियां।
औषधीय पौधे व फूलों की खेती का राजस्थान के संदर्भ में सामान्य ज्ञान। राजस्थान के संदर्भ में उद्यान विभाग की महत्वपूर्ण योजनाएं।

(स) पशुपालन

पशुपालन का कृषि में महत्व। पशुधन का दूध उत्पादन में महत्व एवं प्रबन्धन। निम्न पशुधन नस्लों की विशेषताएँ, उपयोगिता व उत्पति स्थान का सामान्य ज्ञान।
गाय - गीर, थारपारकर, नागौरी,राठी, जर्सी, होलिस्टन फ्रीजियन, मालवी, हरियाणा, मेवाती।
भैंस - मूर्रा, सूरती,नाला, रावी, भदावरी, जाफरवादी, मेहसाना।
बकरी - जमनापारी, बारबरी, बीटल, टोगनर्ब |
भेड़ - मारवाड़ी, चोकला, मालपुरा, मेरीनो, कराकुल, जैसलमेरी, अविवस्त्र, अविकालीन।
ऊंट प्रबन्धन, पशुओं की आयु गणना।
सामान्य प्रशु औषधियों के प्रकार, उपयोग, मात्रा एवं दवाईयां देने का तरीका।
जीवाणु रोधक - फिनाईल, कार्बोलिक एसिड, पोटेशियम परमेगनेट(लाल दवा), लाईसोल।
विरेचक - मेगनेशियम सल्फेट (मैकसल्फ), अरण्डी का तेल।
उत्तेजक - एल्कोहल, कपूर।
कृमिनाशक - नीला थोथा, फिनोविस।
मर्दन तेल - तारपीन का तेल।
राजस्थान के पशुओं की मुख्य बीमारियों के कारक, लक्षण तथा उपचार, पशु-प्लेग, खुरपका-मुहंपका, लगड़ी, एन्थ्रेक्स, गलघोटूं, थनेला रोग, दुग्ध बुखार, रानीखेत, मुर्गियों की चेचक, मुर्गियों की खूनी पेचिस।
दुग्ध उत्पादन, दुग्ध एवं खीस संघटन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन,दुग्ध परिरक्षण, दुग्ध परीक्षण एवं गुणवत्ता। दुग्ध में वसा को ज्ञात करना, आपेक्षिक घनत्व,अम्लता तथा क्रीम पृथककरण की विधि तथा यत्रों की आवश्यकता एवं दही, पनीर एवं घी बनाने की विधि। दुग्धशाला में बर्तनों की सफाई एवं जीवाणु रहित करना। राजस्थान के संबंध में पशुपालन कियाओं एवं गतिविधियों से संबंधित शब्दावली।